PROGRAMME SPECIFIC OUTCOME (UG)

प्रथम पत्र ––

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थीगण विभिन्न काव्य,महाकाव्य आदि का अध्ययन,उसका उद्भव और विकास के साथ ही लघुसिद्धांतकौमुदी के माध्यम से व्याकरण के प्रारंभिक ज्ञान संज्ञा, प्रकरण,अच् सन्धि, हल सन्धि, आदि से व्याकरण की महत्ता को समझ सकेंगें।

द्वितीय पत्र ––

इस पाठ्यक्रम में छात्रगण विभिन्न कवियों के महाकाव्य यथा कालिदास विरचित मेघदूत, महाकवि भारवि द्वारा विरचित किरातार्जुनीयम् का अध्ययन करेंगें वहीं श्रीमद्भागवत गीता के माध्यम से भक्ति योग से परिचित होंगें और काव्यदीपिका के माध्यम से काव्य का लक्षण, प्रयोजन,रस, दोष, गुण आदि से भी वे अवगत हो सकेंगें।

तृतीय पत्र ––

इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थीगण गद्य काव्य जैसे कादंबरी, शिवराजविजय का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें वहीं भारतीय दर्शन के माध्यम से आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन, त्रिविध दुखों से निवृत्ति,सांख्य,योग,न्याय,वैशेषिक,मीमांसा,वेदांत, बौद्ध, जैन, चार्वाक आदि दर्शनों के गूढ़ से ज्ञान से वे अवगत हो सकेंगें।

चतुर्थ पत्र ––

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थीगण कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुंतलम् नाटक से परिचित होंगें वहीं व्याकरण में लघुसिद्धांतकौमुदी के माध्यम से व्याकरण के सुबन्त प्रकरण, कृदन्त प्रकरण आदि के बारीकियों से अवगत हो सकेंगें।

पंचम पत्र ––

इस पत्र के माध्यम से छात्रगण वैदिक वांग्मय के सूक्तों,उपनिषदों, आख्यानों आदि से परिचित होंगें साथ ही कठोपनिषद के माध्यम से जीवन का अत्यंत गूढ़ ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।

षष्ठ पत्र ––

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रगण व्याकरण के अंतर्गत लघुसिद्धांतकौमुदी के माध्यम से समास, कारक,एवं स्त्री प्रत्यय आदि से अवगत होंगें वही भाषा विज्ञान में भाषा की उत्पत्ति,उसकी परिभाषा, भाषा एवं बोली,ध्वनियों का वर्गीकरण आदि से अवगत हो सकेंगें।

सप्तम पत्र ––

इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थीगण काव्यशास्त्र के अंतर्गत साहित्य दर्पण नामक काव्यशास्त्र के माध्यम से काव्य का स्वरूप, प्रयोजन, उसके भेद, रस आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें वहीं श्रुतबोध में लिखित छंद,अनुष्टुप,आर्या, वंशस्थ आदि छंदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।

अष्टम पत्र ––

इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थीगण संस्कृत के निबंध,संस्कृत अनुवाद, वाक्य रचना, संक्षेपण एवं ज्योतिष के अंतर्गत ज्योतिष शिशु बोध के माध्यम से ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान,ग्रह, नक्षत्र,राशि, वार, तिथि, करण, योग, आदि के ज्ञान से परिचित हो सकेंगें।

स्नातक (संस्कृत) प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम

PROGRAMME OUTCOME

स्नातक स्तर के इस पाठ्यक्रम में सदियों पुराने संचित भारतीय संस्कृति एवं उसके विरासत से परिचित कराने में सक्षम इस पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थीगण समर्थवान् बनेंगे साथ ही वे सीखेंगे कि प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति कितनी सुदृढ़ समुन्नत थी। जिसका प्रभाव प्रत्येक पर अवश्यमेव पड़ता है। इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य यह है कि प्रत्येक को भारतीय संस्कृति एवं विरासत से प्रेरणा मिले और अपने जीवन को उत्थान के पथ पर अग्रसर करने हेतु आगे बढ़े।

स्नातक प्रथम वर्ष

COURSE OUTCOME

प्रथम पत्र–– संस्कृत साहित्य का इतिहास

- इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थीगण विभिन्न काव्य एवं महाकाव्य आदि का अध्ययन कर सकेंगें।
- वेद, वेदांग,रामायण, महाभारत, गीतिकाव्य,गद्य काव्य के उद्भव एवं विकास का परिचय कराया जाएगा।
- लघुसिद्धांतकौमुदी के माध्यम से विद्यार्थीगण व्याकरण के प्रारंभिक ज्ञान से परिचित हो सकेंगें।
- संज्ञा प्रकरण, अच् संधि, हल् संधि, और विसर्ग संधि के माध्यम से संधि करने की बारीकी से अवगत हो सकेंगें।
- व्याकरण के इन प्रारंभिक ज्ञान से व्याकरण की महत्ता समझेंगे जिससे संस्कृत वांग्मय के अन्य शास्त्रों के अध्ययन में लाभ प्राप्त कर सकेंगें।

स्नातक प्रथम वर्ष

द्वितीय पत्र

- इस पत्र में विद्यार्थीगण विभिन्न कवियों के महाकाव्य आदि से अवगत हो सकेंगें।
- कालिदास विरचित मेघदूत नामक गीतिकाव्य से परिचित होंगे साथ ही मेघदूत में वर्णित रामगिरि आश्रम से अमरावती के मार्ग को जानकार कालिदास के भौगोलिक ज्ञान का लाभ प्राप्त कर सकेंगें।
- अर्थ गौरव के लिए प्रसिद्ध महाकवि भारवि द्वारा विरचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के माध्यम से अर्थ की गंभीरता एवं उसमें छिपी गूढ़ ज्ञान की बातें आदि से अवगत हो सकेंगें।
- श्रीमद्भागवत गीता के माध्यम से भक्ति योग से परिचित हो सकेंगे साथ ही भक्ति योग के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति के सुगम मार्ग से भी अवगत हो सकेंगें।
- काव्यों के संकलन ग्रंथ काव्यदीपिका के माध्यम से काव्य के लक्षण, प्रयोजन, में रस, दोष, गुण, अलंकार आदि का परिचय प्राप्त कर सकेंगें।

स्नातक द्वितीय वर्ष

तृतीय पत्र

- इस पत्र में गद्य काव्यों एवं दर्शन के विषय में परिचय प्राप्त होगा।
- कादंबरी के माध्यम से विद्यार्थीगण बाणभट्ट की उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा से अवगत हो पाएंगे।
- शिवराजविजय के माध्यम से महाकवि श्री अंबिकादत्त व्यास की उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा से परिचित हो सकेंगे साथ ही शिवाजी के शौर्य, वीरता एवं पराक्रमता से विद्यार्थीगण परिचित हो पाएंगे।
- भारतीय दर्शन के माध्यम से आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों का परिचय प्राप्त होगा । इन दर्शनों के माध्यम से जीवन के त्रिविध दुःख से निवृत्ति का मार्ग अवगत होगा। सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक,मीमांसा, वेदांत,बौद्ध,जैन, चार्वाक आदि दर्शनों के माध्यम से गूढ़ ज्ञान की बातों का परिचय प्राप्त हो सकेगा।

स्नातक द्वितीय वर्ष

चतुर्थ पत्र

- इस पत्र में नाटक एवं व्याकरण का परिचय प्राप्त होगा।
- महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुंतलम नाटक उनकी अब तक की सर्वोत्कृष्ट रचना है। इस नाटक के माध्यम से कालिदास की अद्वितीय काव्य कला कामिनी के वाग्विलास से विद्यार्थीगण परिचित हो सकेंगें।
- व्याकरण में लघुसिद्धांतकौमुदी के माध्यम से विद्यार्थीगण व्याकरण की कई बारीकियों से अवगत हो सकेंगे। जैसे—सुबन्त प्रकरण, तिङ्न्त एवं कृदंत प्रकरण, भ्वादि प्रकरण, अजन्त, हलन्त प्रकरण की सूत्र एवं साधनिका द्वारा उसकी प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगें।

स्नातक तृतीय वर्ष

पंचम पत्र—— वैदिक वाङ्मय

- इस पत्र में वैदिक वाङ्मय के सूक्तों, उपनिषदों, आख्यानों आदि का परिचय प्राप्त होगा।
- ऋक्सूक्त निकरः के माध्यम से अग्नि, सविता, मरुत एवं सूर्य सूक्तों का परिचय प्राप्त होगा। जिससे कि यह ज्ञान होगा कि वैदिक देवताओं के काव्य कितने उत्कृष्ट हैं।
- कठोपनिषद के माध्यम से जीवन का अत्यंत गूढ़ ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। जैसे नचिकेता के माध्यम से आत्मा और परमात्मा विषयक गूढ़ ज्ञान से परिचय प्राप्त हो पाएगा।
- हरिश्चंद्रोपाख्यान के माध्यम से कर्म की महत्ता के विषय में ज्ञात होगा कि मनुष्य को सदैव अपने कर्म करने में निरत रहना चाहिए, वही कर्म उसे एक दिन प्रसिद्धि भी दिलाता है।

स्नातक तृतीय वर्ष

षष्ठ पत्र –– व्याकरण एवं भाषा विज्ञान

- इस पत्र में व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के बारीकियों से विद्यार्थीगण अवगत हो सकेंगें।
- लघुसिद्धांतकौमुदी के माध्यम से समास कारक एवं स्त्री प्रत्यय के सूत्रों एवं साधनिकाओं की प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगें।
- समास के विग्रह रूप एवं विग्रह रूप के समस्त पद के प्रक्रिया से भी अवगत हो सकेंगें।
- भाषा विज्ञान में भाषा की उत्पत्ति उसकी परिभाषा भाषा एवं बोली के विषय में जानकारी प्राप्त होगी।
- वागेंद्रियों के परिचय प्राप्त होंगे।
- ध्वनियों के वर्गीकरण के माध्यम से स्वर एवं व्यंजन वर्गीकरण की प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगें।

स्नातक तृतीय वर्ष

सप्तम पत्र–– साहित्य दर्पण

- इस पत्र में काव्यशास्त्र एवं छंद का ज्ञान प्राप्त होगा।
- आचार्य विश्वनाथ द्वारा रचित सहित्यदर्पण नामक काव्यशास्त्र के माध्यम से विद्यार्थीगण काव्य का स्वरूप, प्रयोजन, उसके भेद, रस आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
- साहित्य दर्पण में निर्देशित अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण द्वारा इसका ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
- श्रुतबोध में लिखित छंद, अनुष्टुप, आर्या, वंशस्थ आदि छंदों के लक्षण एवं उदाहरण द्वारा इसका ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।

स्नातक तृतीय वर्ष

अष्टम पत्र

- इस पत्र में संस्कृत के निबंध, संस्कृत अनुवाद, वाक्य रचना, संक्षेपण एवं ज्योतिष आदि के ज्ञान से परिचित हो सकेंगें।
- संस्कृत निबंध के माध्यम से भारवेरर्थगौरवम्, कालिदाससर्वस्वमभिज्ञानशकुंतलम् , बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम, माघेसन्ति त्रयोगुणाः आदि निबंधों से परिचित हो सकेंगें।
- अनुवाद प्रकरण में संस्कृत से हिंदी तथा हिंदी से संस्कृत के अनुवाद करने की प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगें।
- वाक्य रचना के माध्यम से संस्कृत में वाक्य की रचना कर सकेंगें।
- संक्षेपण के माध्यम से बृहद रूप को संक्षेप में लिखना सीख सकेंगें।
- ज्योतिष शिशु बोध के माध्यम से ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान ग्रह, नक्षत्र, राशि, वार, तिथि, करण, योग, शुभ अशुभ, लक्षण, दिशा आदि के ज्ञान से परिचित हो सकेंगें।

(D.K.Vishwakarma)
Member of IQAC,Dept.of Sanskrit
GD College, Begusarai

(Dr.Shashikant Pandey)
HOD,Department of Sanskrit
GD College, Begusarai